



RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 5

विश्व का भूगोल



विश्व का भूगोल

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ <ul style="list-style-type: none"> • पर्वत • पठार • मैदान • मरुस्थल 	(Pre & Mains) 1
2.	प्रमुख नदियाँ एवं झीले <ul style="list-style-type: none"> • अपवाह प्रतिरूप के प्रकार • प्रमुख नदियाँ • प्रमुख झीले 	(Pre) 15
3.	कृषि के प्रकार <ul style="list-style-type: none"> • कृषि के प्रकार • विश्व के कृषि प्रदेश • विश्व भर में प्रचलित कृषि प्रणालियाँ 	(Pre) 29
4.	विश्व के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र	(Pre) 34
5.	पर्यावरणीय मुद्दे <ul style="list-style-type: none"> • जलवायु परिवर्तन <ul style="list-style-type: none"> ○ जलवायु परिवर्तन के चालक ○ जलवायु परिवर्तन के भविष्य के जोखिम और प्रभाव ○ जलवायु परिवर्तन शमन(यूएनईपी) : • ग्लोबल वार्मिंग <ul style="list-style-type: none"> ○ प्रमुख ग्रीनहाउस गैसों ○ ग्लोबल वार्मिंग के कारण ○ ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव • ओजोन रिक्तीकरण (यूएनईपी) • ओजोन छिद्र • ओजोन हेलो • ओजोन रिक्तीकरण के प्रभाव • नियंत्रण उपाय और संबंधित निकाय • जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय संगठन, कार्यक्रम और सम्मेलन <ul style="list-style-type: none"> ○ जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल :(आईपीसीसी) ○ जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) ○ संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) ○ विश्व मौसम विज्ञान संगठन ○ वैश्विक पर्यावरण सुविधा • जलवायु परिवर्तन प्रोटोकॉल <ul style="list-style-type: none"> ○ क्योटो प्रोटोकॉल ○ सीओपी 21 या पेरिस शिखर सम्मेलन 	(Pre & Mains) 44
6.	पृथ्वी की संरचना <p>पृथ्वी का आंतरिक भाग</p> <p>पृथ्वी की आंतरिक संरचना के अंतर्गत पृथ्वी की परतें</p>	(Mains) 49

	भूकंपीय असम्बद्धता क्षेत्र		
7.	भू वैज्ञानिक समयसारिणी पूर्व कैम्ब्रियन या आद्य कल्प (Precambrian or Archean Era) पुराजीवी कल्प (Palaeozoic Era) मेसोजासेइक कल्प (Mesozoic Era) सेनोजोइक कल्प (Cenozoic Era)	(Mains)	53
8.	भूकंप और ज्वालामुखी <ul style="list-style-type: none"> • ज्वालामुखी उत्पत्ति के कारण • ज्वालामुखी से निकलने वाले पदार्थ • ज्वालामुखी से निकलने वाले विखंडित पदार्थ • ज्वालामुखी के प्रकार • उद्गार के अनुसार • ज्वालामुखी का वितरण • परि प्रशांत महासागर की तटीय पेटी • मध्य महाद्वीपीय पेटी (Mid Continental Belt) • अन्धमहासागरीय पेटी (Atlantic Belt) • अन्य बिखरे हुए (Scattered Volcanoes) ज्वालामुखी • ज्वालामुखी का प्रभाव • ज्वालामुखी विस्फोट के नकारात्मक प्रभाव • ज्वालामुखी विस्फोट के सकारात्मक प्रभाव • हॉट स्पिंग्स और गीजर • भूकंप • भूकंप केंद्रफोकस/ अधिकेंद्र • भूकंप का मापन • भूकम्पीय लहरें (Seismic Waves) • भूकम्प की तीव्रता • भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार भूकम्प के कारण • भूकम्पों का वर्गीकरण • संसार के भूकम्प क्षेत्र • प्रशान्त महासागर की तटीय पेटी (Coastal Pacific Belt) • मध्यवर्ती महाद्वीपीय पेटी (Mid Continental Belt) • भूकम्प शून्य क्षेत्र (Earthquake Silent Belte) • सुनामी • भारत के भूकम्पीय क्षेत्र 	(Mains)	56
9.	भू राजनीतिक समस्याएँ दक्षिण चीन सागर संघर्ष आर्मेनिया-अज़रबैजान संघर्ष अरब स्पिंग और सीरियाई संकट अरब स्पिंग कूटनीति के बदलते क्षेत्र सॉफ्ट पावर(नम्र शक्ति) डिप्लोमेसी नम्र शक्ति भारत की जलवायु परिवर्तन कूटनीति अंतरिक्ष कूटनीति	(Mains)	63
10.	विश्व के महाद्वीप अफ्रीका <ul style="list-style-type: none"> • राजनीतिक विभाजन • भौतिक विशेषताएँ 	(Pre & Mains)	68

	<ul style="list-style-type: none"> • अफ्रीकी मृदा • वनस्पति और वन • जल अपवहन • मरूस्थल • अफ्रीका के वन्यजीव 	
11.	एशिया <ul style="list-style-type: none"> • राजनीतिक विभाजन • भौतिक विशेषताएँ • एशिया की जलवायु • मृदा • एशिया की वनस्पति • अपवाह प्रणाली • एशिया के घास के मैदान • एशिया के वन्यजीव 	76
12.	ऑस्ट्रेलिया और ओशिनिया <ul style="list-style-type: none"> • राजनीतिक विभाजन • ऑस्ट्रेलिया • न्यूजीलैंड • ओशिनिया में द्वीप देश 	89
13.	उत्तरी अमेरिका <ul style="list-style-type: none"> • भौगोलिक विस्तार • क्षेत्रीय प्रभाग • भौतिक प्रभाग • अपवाह तंत्र • मृदा 	101
14.	यूरोप <ul style="list-style-type: none"> • भौगोलिक विस्तार • भौतिक विभाजन • जलवायु • अपवाह 	106
15.	दक्षिण अमेरिका <ul style="list-style-type: none"> • भौतिक स्थान • भौतिक विशेषताएँ • अपवाह • जलवायु • वन और वनस्पति • वन्य जीवन 	114
16.	अंटार्कटिका <ul style="list-style-type: none"> • भौगोलिक स्थिति • जलवायु • वन्य जीवन 	120

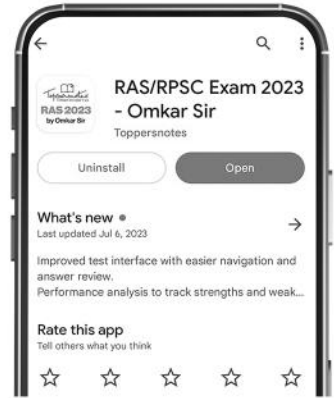
Dear Aspirant,
Thank you for making the right decision by choosing TopperNotes.
To use the QR codes in the book, Please follow the below steps:-



To install the app, scan the QR Code with your mobile phone camera or Google Lens



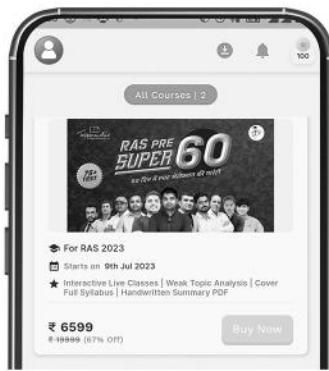
RAS Preparation APP by TopperNotes



Download the app from Google Play Store



To Login enter your Phone Number



Choose your Course



Click on SCAN QR



Choose any QR CODE from book

- Solution Videos
- Concept Videos
- Doubt Videos
- Additional Learning Material
- Topic wise practice
- Weakness analysis
- Rank Predictor
- Test Practice

For any technical help, write us at hello@toppersnotes.com or whatsapp on [7665641122](https://wa.me/7665641122).

राजस्थान लोक सेवा आयोग

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (प्रारम्भिक) परीक्षा, 2023

:- परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम :-

विश्व एवं भारत का भूगोल

विश्व का भूगोल :-

- प्रमुख स्थलाकृतियाँ— पर्वत, पठार, मैदान एवं मरुस्थल
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- कृषि के प्रकार
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश
- पर्यावरणीय मुद्दे — मरुस्थलीकरण, वनोन्मूलन, जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग (ऊष्मीकरण), ओजोन अवक्षय

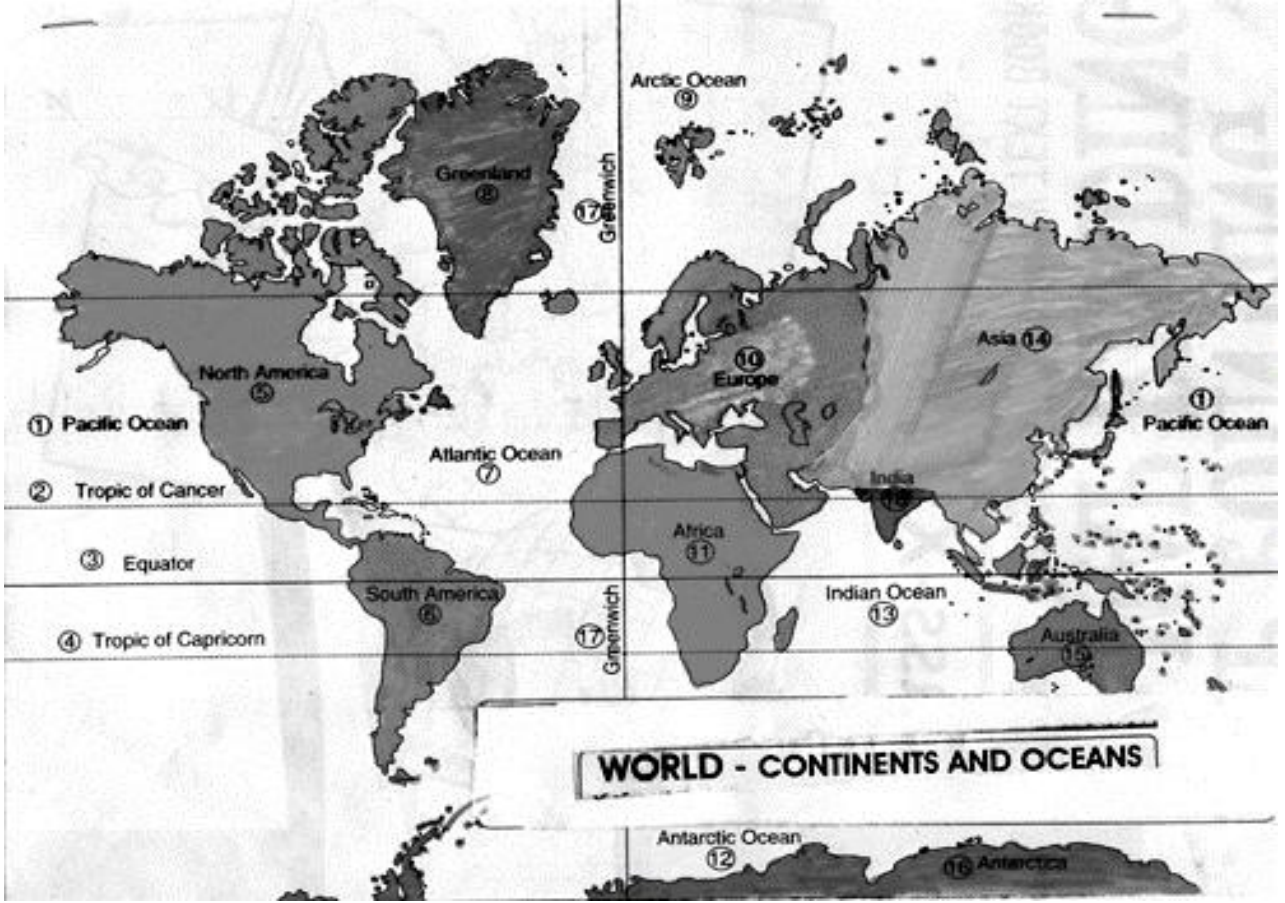
राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (मुख्य) परीक्षा, 2023

:- परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम :-

इकाई III— पृथ्वी विज्ञान (भूगोल एवं भू-विज्ञान)

खण्ड अ—विश्व

- पृथ्वी की संरचना एवं भूवैज्ञानिक समय सारिणी।
- प्रमुख भौतिक भू-आकृतियाँ : पर्वत, पठार, मैदान, मरुस्थल।
- भूकंप एवं ज्वालामुखी : प्रकार, वितरण एवं उनका प्रभाव।
- प्रमुख भू-राजनीतिक समस्याएं।
- प्रमुख पर्यावरण संबंधी मुद्दे।

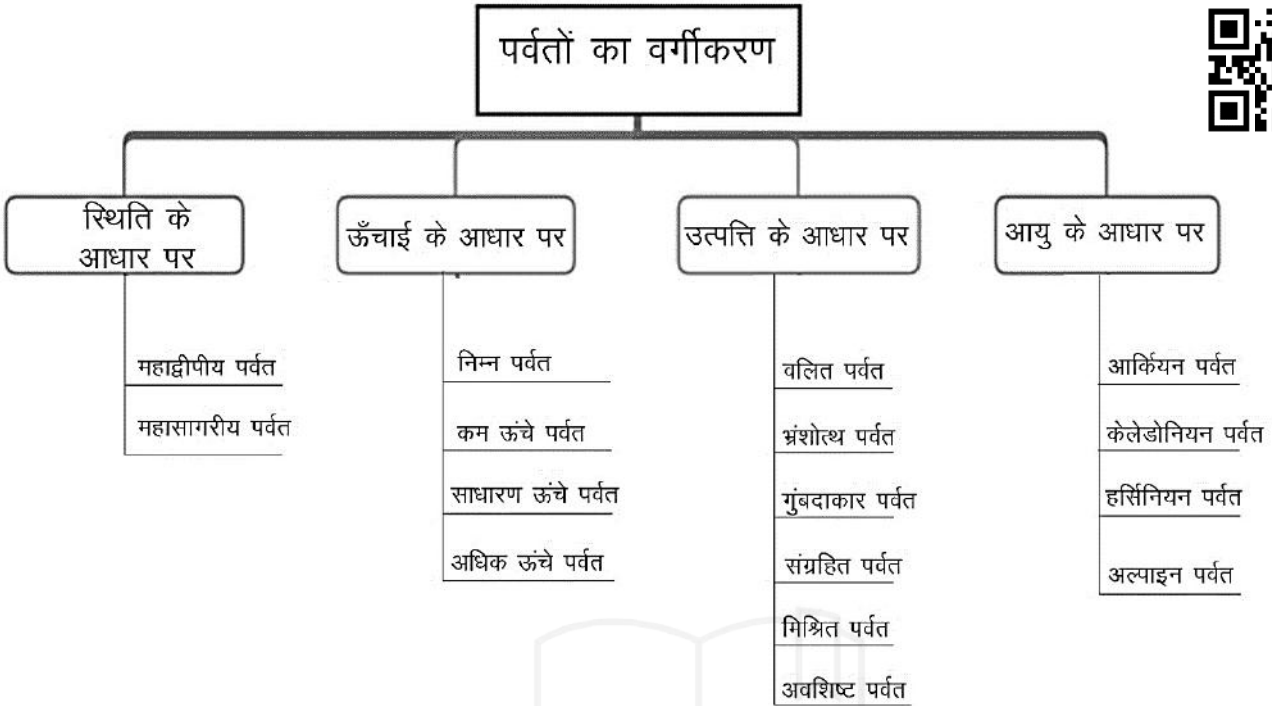


भू-आकृति विकास के नियंत्रक कारक निम्नलिखित हैं:

- रॉक रचना या मूल चट्टानें।
- उच्चावच
- भूवैज्ञानिक संरचना
- जलवायु
- बहिर्जात एजेंट
- ऊर्जा
- जैविक गतिविधियाँ
- मानव



पर्वत



- पर्वत स्थलरूप, द्वितीय श्रेणी के उच्चावच हैं। भूमि का ऐसा भाग जो निकट के धरातल से अत्यधिक ऊँचाई में उठा हो, या तो अकेले ऊँचा हो अथवा श्रेणी में अथवा शृंखला में हो, पर्वत कहलाता है।
- कुछ भूगोलविद् 600 मीटर से अधिक की ऊँचाई को पर्वत की संज्ञा देते हैं और उससे नीचे के उठे भाग को पहाड़ियों की संज्ञा देते हैं।

पर्वतन (Orogenesis) - प्रक्रमों के समूह, जिनके द्वारा सामूहिक रूप से पर्वत क्रम का निर्माण होता है, उनको पर्वतन कहते हैं।

पर्वतों का वर्गीकरण

निर्माण प्रक्रिया के आधार पर

निर्माण प्रक्रिया के आधार पर पर्वतों को निम्न रूप में विभाजित किया जाता है

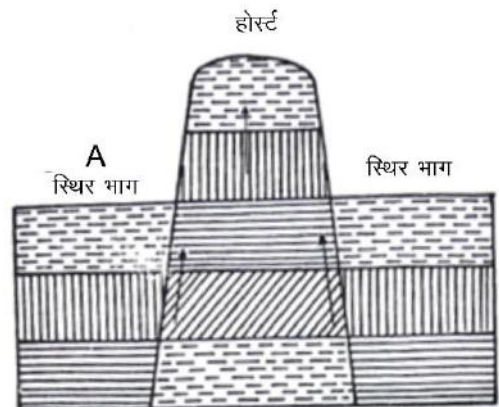
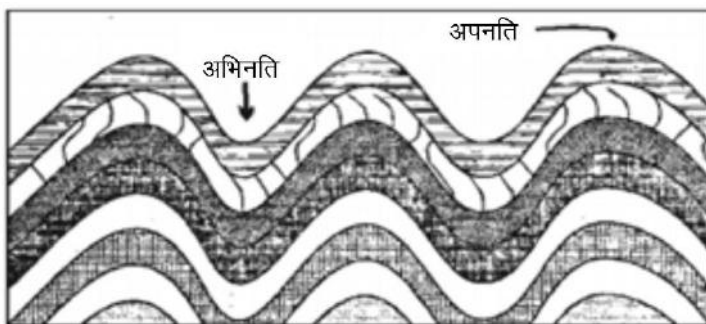


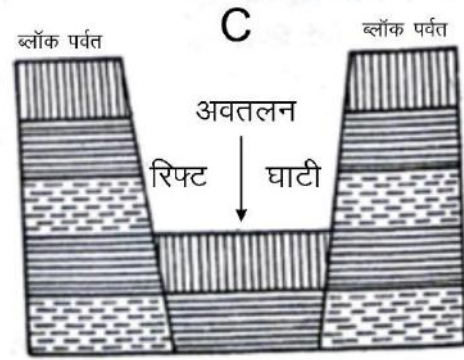
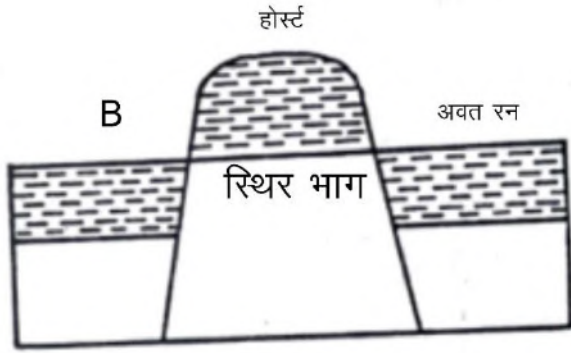
1. वलित पर्वत (Folded Mountains)

- पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा जब चट्टानों में मोड़ या वलन पड़ जाते हैं तो उन्हें मोड़दार या वलित पर्वत कहते हैं। इनका निर्माण भू-सन्नतियों में होता है, जिसे पर्वतों का पालना कहते हैं। ये विश्व के प्रमुख पर्वत तंत्र हैं तथा सबसे युवा पर्वत हैं।
- उदाहरण: यूरोप में आल्पस, एशिया में हिमालय, अफ्रीका में एटलस, ऑस्ट्रेलिया का ग्रेट डिवाइडिंग रेंज, दक्षिण अमेरिका का एण्डीज, उत्तरी अमेरिका का रॉकी।

2. भ्रंशोत्थ पर्वत (Block Mountains)

- पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों के प्रभाव से धरातल विकसित दो समानान्तर भ्रंशों के भ्रंशतलों के सहारे उत्थित स्थलखण्ड भ्रंशोत्थ पर्वत के रूप में विकसित होते हैं। उदाहरण: भारत में नीलगिरि, कैलिफोर्निया में सियरा नेवादा, पाकिस्तान में साल्ट रेंज, जर्मनी का ब्लैक फारेस्ट





ज्वालामुखी पर्वत (Volcanic Mountains)

- लावा एवं पायरोक्लास्टिक पदार्थों के निष्कासन से ज्वालामुखीय पर्वत बनते हैं। यदि ये लंबे समय तक जारी रहते हैं तो इनसे अति विशाल ज्वालामुखीय अम्बार बन जाता है।
- उदाहरण: अफ्रीका के किलिमंजारो, संयुक्त राज्य अमेरिका में माउन्ट रेनियर, हुड और शास्ता, जापान में फ्यूजीयामा, एन्डीज का कोटोपेक्सी, चिली का एकाकागुआ।

4. गुम्बदाकार (Domed Mountains)

- जब पृथ्वी धरातलीय में चाप के आकार में उभार होने से धरातलीय ऊपर उठ जाता है तो उसे गुम्बदनुमा पर्वत जाता है। जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका की ब्लैक पहाड़ियाँ, सिनसिनाती और हेनरी पर्वत

5. अवशिष्ट (Residual Mountains)

- पर्वत जो लंबे समय अंतराल में अपरदन की प्रक्रिया द्वारा काट-छाँट से बनते हैं, अवशिष्ट कहलाते हैं।

- उदाहरण: भारत में विंध्याचल, अरावली, सतपुड़ा आदि।

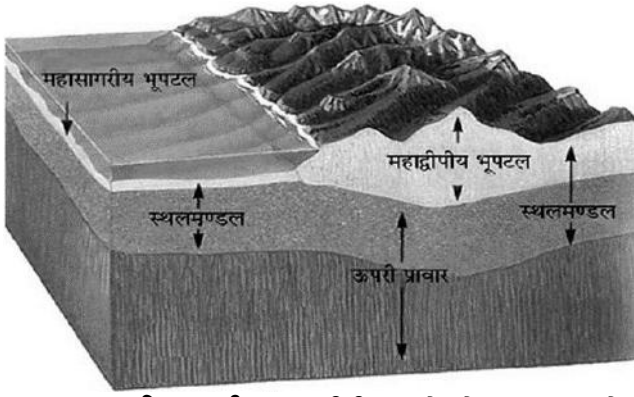
- अफ्रीका का सर्वोच्च पर्वत शिखर माँउण्ट किलिमंजारो है। माँउण्ट ब्लैक, आल्पस पर्वत का सर्वोच्च शिखर है जो यूरोप में स्थित है। व्हाइट पर्वत कैलिफोर्निया में स्थित है।
- विश्व की सर्वाधिक लम्बी पर्वत शृंखलाएँ हैं- एण्डीज (7000 कि.मी.), रॉकी (4800 कि.मी.), एवं हिमालय (2500 कि.मी.)।
- मौनाकी पर्वत (हवाई द्वीप) सागर नितल के आधार पर विश्व का सर्वाधिक ऊँचा पर्वत है।
- आल्पस पर्वत फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैंड तथा आस्ट्रिया में विस्तृत है।
- अफ्रीका का एटलस पर्वत मोरक्को, अल्जीरिया एवं ट्यूनीशिया में विस्तृत है।

पर्वत शिखर	ऊँचाई	पर्वत श्रेणी	
1.	एवरेस्ट	8848	हिमालय(नेपाल/तिब्बत)
2.	के 2 गाडविन	8611	कारकोरम (भारत)
3.	कंचनजंघा	8597	वृहद हिमालय (भारत)
4.	नंगा पर्वत	8124	हिमालय (भारत)
5.	एकोकागुआ	6960	एण्डीज (अर्जेन्टीना)
6.	ओजास डेलसलाडो	6885	एण्डीज (अर्जेन्टीना/चिली)
7.	जिम्बरेजो	6267	एण्डीज(इक्वेडोर)
8.	मैकिन्ले	6124	अलास्का (स.रा.अमेरिका)
9.	कोटापैक्सी	5897	एण्डीज (इक्वेडोर)
10.	किलिमंजारो	5895	किलिमंजारो (तंजानिया)
11.	एलबुर्ज शिखर	5642	काकेशस (जार्जिया)
12.	ब्लैक शिखर	4807	आल्पस (फ्रांस/स्पेन)
13.	मेट्टारहार्नशिखर	4478	जुरा (स्विट्जरलैंड)
14.	कुक शिखर	3764	कुक (न्यूजीलैंड)

स्थिति के आधार पर

- महाद्वीपीय पर्वत:** ये महाद्वीपों पर स्थित पर्वत हैं। ये दो प्रकार के हो सकते हैं:

- तटीय पर्वत:** महाद्वीपों के किनारों पर महासागरों के समानान्तर पाये जाते हैं।
 - जैसे: एण्डीज, रॉकीज, अप्लेशियन, पश्चिमी घाट, आल्प्स, एटलस।

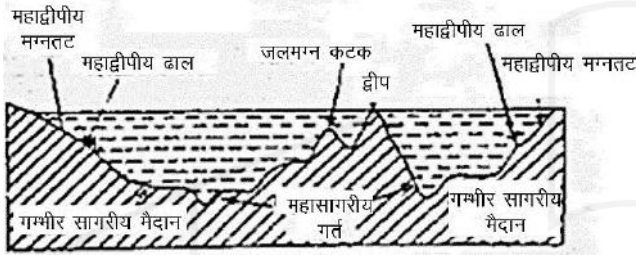


(ii) अंतरिक पर्वत: महाद्वीपीय तटों से दूर स्थल के आंतरिक भागों में पाये जाते हैं।

○ जैसे: यूराल, कुललुन, त्यानसांग, अल्टाई।

2. महासागरीय पर्वत: सागर द्रोणियों या महाद्वीप निम्न तटों पर पाये जाते हैं।

○ जैसे: हवाई द्वीप का मोनाकी पर्वत, अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह।



ऊँचाई के आधार पर

1. निम्न पर्वत: जिनकी ऊँचाई 700 मीटर से 1000 मीटर के मध्य होती है। उदाहरण: विंध्याचल।
2. कम ऊँचे पर्वत: जिनकी ऊँचाई 1000 मीटर से 1500 मीटर के मध्य होती है। उदाहरण: अरावली।
3. साधारण ऊँचाई वाले पर्वत: जिनकी ऊँचाई 1500 मीटर से 2000 मीटर के मध्य होती है। उदाहरण: अल्पेशियन।
4. अधिक ऊँचे पर्वत: जिनकी ऊँचाई 2000 मीटर से अधिक होती है। उदाहरण: एण्डीज, हिमालय, आल्पस।

आयु के आधार पर

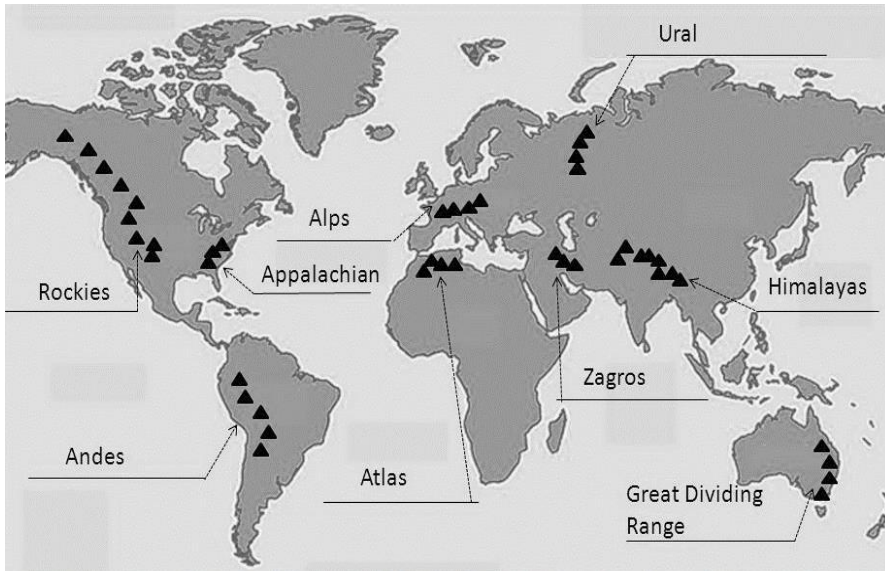
1. आर्कियन पर्वत: आज से 40 करोड़ वर्ष पूर्व कैम्ब्रियन काल में आर्कियन पर्वत निर्माणकारी हलचलें घटित हुईं।
 - इस समय यूरोप में फेनोस्केण्डीनेविया तथा भारत में अरावली पर्वत का निर्माण हुआ।
2. केलेडोनियन पर्वत: लगभग 32 करोड़ वर्ष पूर्व घटित हलचलों के दौरान अमेरिका में अल्पेशियन, यूरोप में स्कॉटिश अपलैण्ड एवं आयरलैण्ड के पर्वतों का निर्माण हुआ।
3. हर्सिनियन पर्वत: लगभग 22 करोड़ वर्ष पूर्व घटित इन हलचलों को अल्टाइड, वारिस्कन व आरमोरिकन आदि नामों से भी जाना जाता है।
 - एशिया में थ्यानशान, अल्टाई, नानशान पर्वत, आस्ट्रेलिया में पूर्वी कार्डिलेरा, यूरोप में पेनाइन आदि पर्वत इसी काल में बने।
4. अल्पाइन पर्वत: आज से लगभग 3 करोड़ वर्ष पूर्व इन नवीनतम मोड़दार पर्वतों का निर्माण प्रारम्भ हुआ।
 - जिनमें हिमालय, कुललुन, कराकोरम, अराकान, एल्बुरज, हिन्दुकुश, राँकीज, एण्डीज, आल्पस, बाल्कन, पैरेनीज आदि पर्वत श्रेणियाँ उल्लेखनीय हैं।

महत्त्वपूर्ण पर्वत श्रृंखलाएं

सौर प्रणाली में किसी भी ग्रह पर स्थित ज्ञात सर्वोच्च पर्वत मंगल ग्रह पर स्थित माउंट ओलम्पस है। यह सौर प्रणाली का सर्वोच्च सक्रिय ज्वालामुखी भी है।

एण्डीज

- दुनिया में सबसे लंबी महाद्वीपीय पर्वत श्रृंखला।
- लगभग 4,000 मीटर की औसत ऊँचाई
- वेनेजुएला, कोलंबिया, इक्वाडोर, पेरू, बोलिविया, चिली, और अर्जेंटीना के बीच फैले हुए हैं।
- एशिया के बाहर दुनिया की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला है।
- सर्वोच्च शिखर, माउंट एंकंगागुआ, समुद्र तल से 6,962 मीटर की ऊँचाई तक है।





रॉकी पर्वत

- पश्चिमी उत्तरी अमेरिका में पर्वत श्रृंखला
- 3,000 से अधिक मील पर फैला है।
- प्लेट की टेक्टोनिक गतिविधि के परिणामस्वरूप पश्चिमी उत्तरी अमेरिका में बहुत स्पष्ट दिखाई देता है।

ग्रेट डिविडिंग रेंज

- ग्रेट डिविडिंग रेंज, या पूर्वी हाइलैंड्स, आस्ट्रेलिया की सबसे महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला और दुनिया में तीसरी सबसे लंबी भूमि आधारित रेंज है।
- आस्ट्रेलियाई आल्पस के रूप में भी जाना जाता है।

यूराल पर्वत

- यह उत्तर से दक्षिण में पश्चिमी रूस में आर्कटिक महासागर के तट से यूराल नदी तक और उत्तर-पश्चिमी कजाकिस्तान तक फैला हुआ है।
- यह यूरोप और एशिया के बीच प्राकृतिक सीमा है।
- यहाँ धातु अयस्क, कोयला, कीमती और अर्ध कीमती पत्थर आदि पाए जाते हैं।
- यूराल दुनिया के सबसे पुराने पर्वत श्रृंखलाओं में से हैं।

एटलस पर्वत

- अफ्रीका के उत्तर-पश्चिमी में अल्जीरिया, मोरक्को और ट्यूनीशिया के मध्य लगभग 2,500 किमी में विस्तृत है।
- सबसे ऊंची चोटी टॉब्लक है जो दक्षिण पश्चिम मोरक्को में स्थित है।
- एटलस पर्वत सहारा रेगिस्तान को भूमध्य सागरीय और अटलांटिक तट रेखाओं से अलग करती हैं।

अल्पेशियन पर्वत

- पूर्वी उत्तर अमेरिका में पाई जाने वाली पर्वत श्रृंखला
- अमेरिका के प्रमुख खनिज क्षेत्रों में से एक

हिमालय

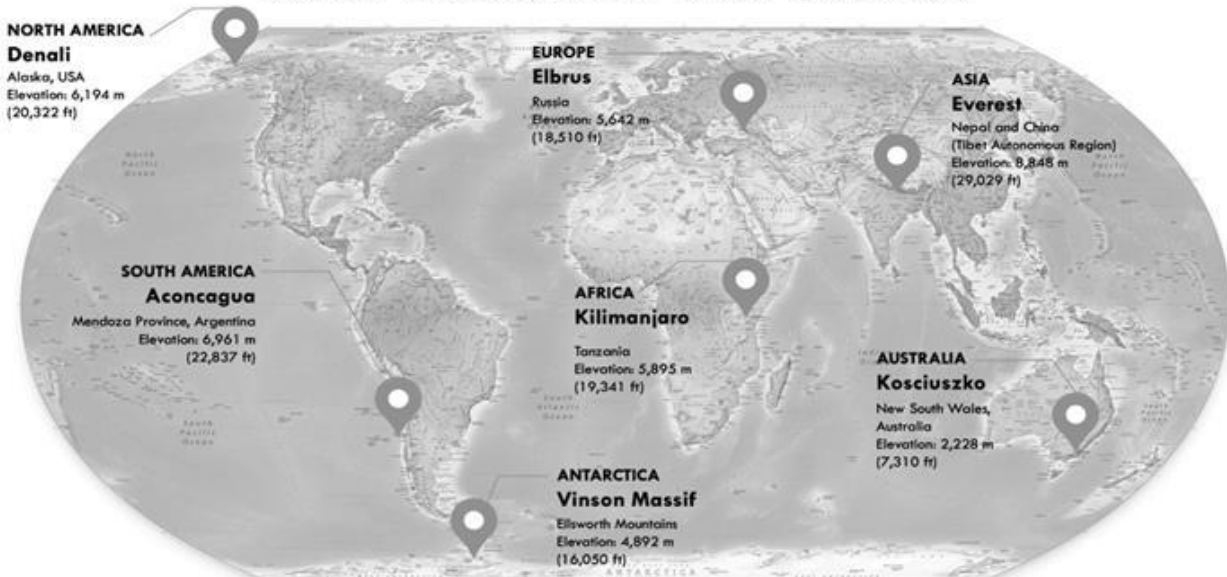
- वे तिब्बती पठार से भारतीय उपमहाद्वीप के मैदानों को अलग कर देते हैं।
- हिमालय पर्वत सबसे ऊंची पर्वत चोटी एवरेस्ट सहित ग्रह की सबसे ऊंची चोटियों का घर है।
- मैदानों के उत्तरी किनारे पर 1000 मीटर ऊंची पहाड़ियों को शिवालिक या उप-हिमालय पर्वतमाला कहा जाता है।
 - आगे की ओर उत्तर में 2000-3000 मीटर ऊंची पहाड़ियों को हिमाचल या महाभारत रेंज के रूप में जाना जाता है।
- हिमालय, काराकोरम और हिंदूकुश पर्वतमाला द्वारा उत्तर-पश्चिम में तिब्बती पठार के उत्तर से, और दक्षिण भारत-गंगा के मैदान से दक्षिण में सीमा पर हैं।
- इसका विस्तार पश्चिम में नंगा पर्वत से लेकर पूर्व में नामचा बारवा तक विस्तृत है।

आल्पस पर्वत

- यूरोप की पर्वत श्रृंखला जो पूर्व में आस्ट्रिया और स्लोवेनिया, पश्चिम में फ्रांस, स्विट्जरलैंड, लिंगेस्टाइन, और दक्षिण पूर्व जर्मनी और दक्षिण में मोनाको और इटली सहित आठ अल्पाइन देशों में लगभग 1,200 किलोमीटर में विस्तृत है।
- अफ्रीकी और यूरोशियन टेक्टोनिक प्लेटों के टकराने से इन पहाड़ों का निर्माण हुआ।
- फ्रांस में स्थित माउंट ब्लैंक आल्प्स में सबसे ऊँचा पर्वत है।

ऊँचाई के आधार पर पर्वत श्रृंखलाएं

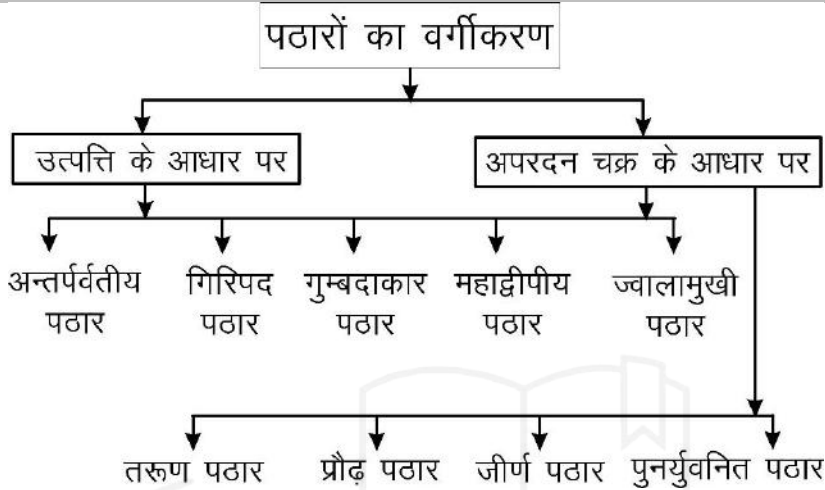
Tallest Mountain on Each Continent



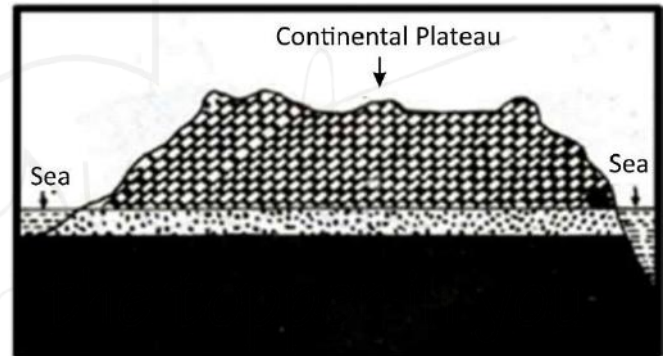


पर्वत	स्थान	उच्चतम चोटी
हिमालय	भारत, नेपाल, भूटान, चीन, पाकिस्तान	एवरेस्ट पर्वत
काराकोरम	पाकिस्तान, भारत, चीन	K2
हिन्दुकुश	अफगानिस्तान, भारत, पाकिस्तान	तिरिच मीर
पामीर	ताजीकिस्तान, चीन, अफगानिस्तान, भारत, पाकिस्तान	इस्माइल सामानी पर्वत
तियानशान	चीन, कज़ाकिस्तान, किर्गिस्तान, भारत, उज़्बेकिस्तान, पाकिस्तान	जेनिश चोकुसु

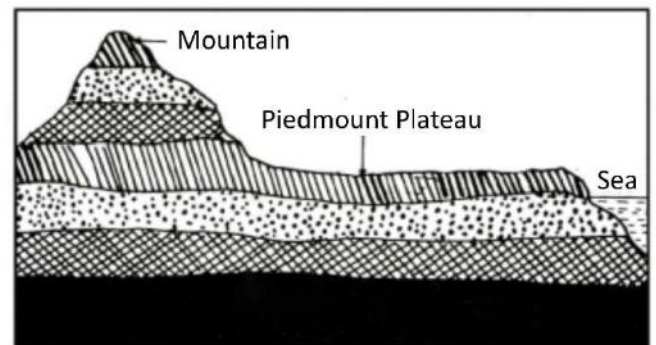
पठार (Plateaus)



- पठार (Plateaus) पठार शब्द फ्रांसिसी शब्द है जिसका अर्थ है सपाट शीर्ष। पठार की ऊँचाई 200 मी० होती है। आस पास की भूमि से ऊँचा भूखण्ड जिसका शिखर सपाट होता है, पठार कहलाता है। पठार में प्रायः एक ही ढाल होता है। ये ऊबड़ खाबड़ (Rough Cut) तथा असमान (Irregular) होते हैं। तिब्बत का पामीर पठार संसार का सबसे ऊँचा तथा विस्तृत पठार है।
अथवा
- पठार धरातल पर स्थित सपाट शीर्ष, मन्द ढाल और विस्तृत आधार वाले स्थलरूप होते हैं। पठार कभी-कभी मैदानों से नीचे होते हैं; जैसे-पीडमाण्ट पठार (संयुक्त राज्य अमेरिका) या पर्वतों से ऊँचे भी होते हैं; जैसे-तिब्बत का पठार (5000मी)
- विश्व के 33% स्थलीय भाग पर पठार पाया जाता है।



- (3) **पियामा पठार या गिरीपाद पठार (Piedmont Plateaus)** पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतों के निर्माण के साथ बना पठार पियामा का पठार कहा जाता है, अर्थात् पर्वतीय नदियों के अपरदन या निक्षेप द्वारा पठार का निर्माण होता है। जैसे- अमेरिका का पिडमोन्ट पठार, दक्षिण अमेरिका में अर्जेन्टाइना का पेंटागोनिया पठार है। इन्हें गिरीपाद पठार भी कहते हैं।



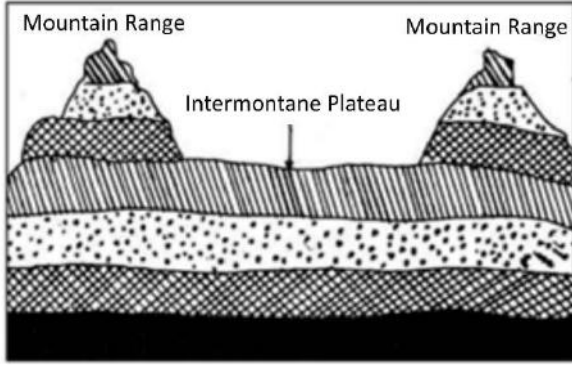
पठार के 7 प्रकार

- (1) **टेक्टोनिक पठार (Tectonic Plateaus)**
जब कोई भूभाग भूगर्भ की शक्तियों के कारण आसपास के क्षेत्रों से ऊपर उठ जाता है तो इसे ही टेक्टोनिक पठार कहते हैं। जैसे - कोलेरेडो एवं कोलम्बिया का पठार।
- (2) **लावा पठार (Lava Plateaus)** ज्वालामुखी के लावा के जमने से बना पठार लावा पठार कहलाता है। जैसे अमेरिका का कोलम्बिया पठार, महाराष्ट्र का पठार





- (4) **अन्तर्पर्वतीय पठार (Inter-mountain Plateaus)** ये पठार पर्वतों के मध्य विकसित होते हैं। इनके किनारे पर ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियाँ होती हैं। जैसे हिमालय एवं क्युनलुन के बीच स्थित तिब्बत का पठार एवं पामीर का पठार।
- पामीर का पठार विश्व का सर्वाधिक ऊँचा पठार है।
 - पामीर के पठार को सर्वाधिक ऊँचा होने के कारण विश्व की छत कहा जाता है।



- (5) **नदीकृत पठार (Riverine Plateaus)**- नदियाँ अपने साथ अपरदित एवं प्रवाहित मलवा बहा लाती हैं और मैदानों में एकत्रित करती हैं इसी मलवे से निर्मित पठार को ही नदीकृत पठार कहते हैं। जैसे विन्ध्य पठार भारत में चेरापूँजी का पठार वर्मा का शान पठार
- (6) **हिमानीकृत पठार (Glaciated Plateaus)**- हिमानियाँ प्रत्येक वर्ष पहाड़ी क्षेत्रों का धीरे धीरे अपरंदन करती रहती हैं। फलतः जो पठार बनता है उसे हिमानीकृत पठार कहते हैं। जैसे - उत्तरांचल का गढ़वाल पठार, ग्रीनलैण्ड पठार, अण्टार्कटिका पठार
- (7) **पवन निर्मित पठार (Aeolian Plateaus)**- पवन द्वारा मरुस्थलों एवं अर्धमरुस्थलों से बालू एवं रेत के कणों को

उड़ाकर किसी उपयुक्त स्थान पर जमा किया जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा निर्मित पठार को ही पवन निर्मित पठार कहते हैं। जैसे- आस्ट्रेलिया का पश्चिमी पठार पाकिस्तान का पोतवार पठार चीन का लोयस पठार

पठार एवं उसकी प्रसिद्धि का कारण

- सोने, ताम्बे तथा हीरे की प्राप्ति के लिए अफ्रीका का पठार प्रसिद्ध है।
- लौह अयस्क तथा मैगनीज़ के लिए ब्राजील का पठार प्रसिद्ध है।
- ब्राजील के ईटावीरा से लौह अयस्क सर्वाधिक पाया जाता है।
- झारखण्ड के छोटानागपुर पठार से कोयला, लोहा, ताम्बा तथा अभ्रक पाया जाता है।
- सर्वाधिक सोना कोलार खान व हट्टी खान से प्राप्त होता है। इन्हीं खानों के लिए कर्नाटक का पठार प्रसिद्ध है।
- सर्वाधिक चाँदी की प्राप्ति मैक्सिको पठार से होती है। आस्ट्रेलिया के पश्चिमी पठार कालगुल व कुलगार्डी से सोना की प्राप्ति होती है।
- पाकिस्तान का साल्ट रेंज नमक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
- कॉफी की खेती के लिए ब्राजील का पठारी क्षेत्र प्रसिद्ध है। कपास की खेती दक्षिण भारत के पठारी क्षेत्रों में सर्वाधिक होती है, क्योंकि इन पठारी में काली मिट्टी अधिक मात्रा में पायी जाती है। अफ्रीका की जोहंसबर्ग स्वर्ण की खान विट्सवाटर रैपेड है।
- ब्राजील के पठारी क्षेत्रों में टेरारोसा नामक मिट्टी पायी जाती है, जिसमें चूने की सर्वाधिक मात्रा है। जो कॉफी की खेती के लिए उपयुक्त होती है।

विश्व के महत्वपूर्ण पठार



विश्व के प्रमुख पठार



तिब्बत का पठार

- दुनिया का सर्वोच्च और सबसे बड़ा पठार और इसलिए दुनिया की छत भी कहा जाता है।
- भारत-आस्ट्रेलिया और यूरोशियन टेक्टोनिक प्लेटों की टक्कर के कारण बना है।
- हेडले कोष्ठ को उलटता है और दक्षिण की ओर भारत के मानसून को प्रभावित करता है।
- यह तिब्बत, पश्चिमी चीन के किंगहई प्रांत और जम्मू और कश्मीर में लद्दाख में फैला है।
- यह पठार दक्षिण में हिमालय पर्वत, उत्तर-पूर्व में कुंगल पर्वतमाला, और पश्चिम में काराकोरम पर्वतमाला से घिरा है।

कोलंबिया - स्नेक पठार

- यहाँ कोलम्बिया नदी की समयक सदी स्नेक नदी उससे मिलती है।
- यह कैस्केड पर्वतमाला और रॉकी पर्वत के किनारे स्थित है और कोलंबिया नदी द्वारा विभाजित है।
- यह पठार ज्वालामुखी उदगार से निकले बैसाल्ट लावा कारण बना है।

कोलोरेडो पठार

- यह अमेरिका के पश्चिमी भाग में विस्तृत सबसे बड़ा पठार है।
- यह कोलोराडो नदी और ग्रांड कैनियन द्वारा विभाजित किया गया है।
- यह पठार अन्तर्पर्वतीय पठार का एक उदाहरण है। यहाँ मेसा और बटस पाये जाते हैं।
- यह पठार आर्टिसियन स्प्रिंग्स के लिए प्रसिद्ध है।

दक्कन का पठार

- भारत के मध्य दक्षिणी भाग में स्थित है।
- पश्चिमी और पूर्वी घाट इसकी सीमा बनाते हैं।
- यह लावा बहाव से बना सबसे बड़ा पठार है।
- कई बेसाल्ट परतों या लावा प्रवाह से बने इस पठार का क्षेत्रफल 500,000 वर्ग किलोमीटर है।
- यह अपने जीवाश्मों के लिए भी जाना जाता है।

किम्बर्ले पठार:

- ज्वालामुखी उदगार से बना यह पठार ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी भाग में स्थित है।
- लौह, सोना, सीसा, जस्ता, चांदी और हीरे जैसे कई खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

कटांगा पठार

- यह अंगोला, कांगो में स्थित है।
- यह तांबा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
- कोबाल्ट, यूरेनियम, जिंक, सिल्वर, गोल्ड और टिन जैसे खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

मेस्करिन पठार

- यह पठार हिंद महासागर में स्थित है और महासागरीय पठार का एक उदाहरण है।
- यह सेशेल्स और मॉरीशस द्वीप समूह के बीच स्थित है।

लॉरेंशियन पठार

- कनाडा के पूर्वी भाग में, यह कनाडाई शील्ड का एक हिस्सा है।
- उत्कृष्ट गुणवत्ता वाला लौह अयस्क यहाँ पाया जाता है।

मैक्सिकन पठार

- इसे 'खनिज स्टोर' भी कहा जाता है। चांदी, तांबे इत्यादि जैसे विभिन्न प्रकार के धातु के खनिज यहाँ से प्राप्त होते हैं।

पैटागोनिया का पठार

- यह अर्जेन्टीना के दक्षिणी भाग में स्थित है।
- यह एक शुष्क पठार है।
- भेड़ पालन के लिए यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

बोलीवियन पठार

- यह एक अन्तर्पर्वतीय पठार है जो एंडीज़ पर्वत की दो श्रेणियों के बीच स्थित है।
- यह टिन के भंडार के लिए जाना जाता है।

मैसिफ सेंट्रल

- यह पठार मध्य फ्रांस में स्थित है।
- यह अंगूर की खेती के लिए प्रसिद्ध है।

एनातोलिया का पठार

- एशिया माइनर के रूप में भी जाना जाता है, ज्यादातर तुर्की इस पठार पर स्थित है।
- यह पॉटीन एवं टौरस पर्वतमाला के बीच स्थित एक अन्तर्पर्वतीय पठार है।
- दजला-फरात नदियाँ इस पठार से प्रवाह करती हैं।
- अंगोरा बकरियों का बहुमुल्य ऊन पाया जाता है।

अन्य

- **स्पेन का पठार:** यह स्पेन के मध्य में स्थित है। यह एक लावा पठार है यह आयरन जैसे खनिजों में समृद्ध है
- **लोयस का पठार:** यह चीन में है। यहाँ की मिट्टी हवा से लाई गई कणों से बनती है। यह अच्छी मिठाई मिट्टी अत्यंत उत्पादक है।
- **पोटवार का पठार:** यह पाकिस्तान के उत्तर पठार (पंजाब) क्षेत्र में स्थित है। सुलेमान पर्वतमाला इस पठार के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
- **बवेरियन का पठार:** जर्मनी के दक्षिणी भाग में स्थित है।



मैदान

मैदान उन समतल भूमि को कहते हैं, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 160 मी० होती है। मैदान अनेक प्रकार के होते हैं



मैदान के प्रकार

- (1) **घर्षित मैदान (Peneplane Plains)** - नदियाँ जब उच्च स्थलीय क्षेत्रों का अपरदन करती हैं तब उससे एक मैदान बनता है, उसे ही घर्षित मैदान कहते हैं। जैसे- अमेरिका में फ्लोरिडा से टेक्सास के बीच निर्मित मैदान।
- (2) **पियामा मैदान (Piedmont Plains)** - इस मैदान का निर्माण गिरीपाद क्षेत्र में होता है इसलिए इसे गिरीपाद भी कहा जाता है। इसमें नदियाँ अपने साथ जो मलवा लेकर आती हैं उसे गिरीपाद या पर्वतों के निचले हिस्से में जमा कर देती हैं उसे एल्युवियल कोन कहते हैं। इसी कोन से पियामा का मैदान, बनता है। जैसे हिमालय पर्वत क्षेत्र में बना माँगार एवं तराई का मैदान, चिली बेसिन, तारिम बेसिन, क्यूनलुन पर्वत चीन के उत्तर में है।
- (3) **बाढ़ का मैदान (Flood Plains)** - बाढ़ के दौरान नदियों द्वारा लाये गये मलवे से जो मैदान बनता है, उसे बाढ़ का मैदान कहते हैं। जैसे उत्तरी भारत का मैदान, चीन में हांगहों या ही सीक्यांग का मैदान, इराक का मैदान, अमेरिका में मिसिसिपी और मिसौरी का मैदान।
- (4) **डेल्टा का मैदान (Delta Plains)** - इन का निर्माण नदी मुहानों पर होता है। यहाँ नदियाँ अपने साथ लाये मलवे का जब निक्षेप करती हैं, तो त्रिभुज की आकृति का निर्माण होता है, इसी त्रिभुज की आकृति को ही ग्रीक भाषा में डेल्टा कहते हैं। जैसे गंगा का डेल्टा, अमेजन का डेल्टा, कांगो का डेल्टा इत्यादि।

- डेल्टा क्षेत्र में उच्च भाग को चौर कहते हैं।
- डेल्टा क्षेत्र में निचले भाग को बील कहते हैं।

- (5) **तटीय मैदान (Coastal Plains)** - इन मैदानों का निर्माण समुद्र के तटीय क्षेत्रों में नदियों द्वारा लाये गये मलवे से होता है। इन मैदानों के पृष्ठ भाग में पठार या पर्वत तथा अग्र भाग में समुद्र होता है। अग्र भाग समुद्रों द्वारा कटे फटे होते हैं। जैसे - रॉकी का तटीय मैदान, एण्डीज का तटीय दान तथा भारत का पश्चिमी एवं पूर्वी तटीय मैदान।।
- (6) **लॉयस मैदान (Loess)** उसे लॉयस मैदान कहते लॉयस फ्रांस एक ग्राम है। उत्तरी चीन का मैदान, जर्मनी से पोलैण्ड तट मैदान लॉयस मैदान का उदाहरण है।
- (7) **कार्स्ट मैदान (Karst Plains)**- इन मैदानों का निर्माण उन स्थानों में होता है जहाँ चूने की चट्टानों की अधिकता पायी जाती है, चूने की चट्टानों में छोटे छोटे गर्त पाये जाते हैं।
 - जिसमें वर्षा पानी भर जाता है इसे डोलाइन कहते हैं।
 - धीरे- धीरे डोलाइन अपरदित होकर मैदान बनाते है उसे कार्स्ट मैदान कहते हैं।
 - मैक्सिको की खाड़ी के तटीय मैदान फ्लोरिडा क्यूबा यूकाटन प्रायद्वीप इत्यादि।

वायु अपरदन से बने मैदान

वायु अपरदन से बने मैदान बने मैदान को पेडाप्लेन कहते है
वायु अपरदन से बने मैदान तीन प्रकार के होते है

- (1) **हमादा** - वायु अपरदन से बना चट्टानी मैदान
- (2) **सेरिर**- अपरदन से बना पथरीला मैदान
- (3) **रेंग**- अपरदन से बालू मैदान
 - **टील मैदान** - हिमनद अपने प्रवाह मार्ग में जब विभिन्न आकार के पत्थर या कण या रेत को जमा कीर्ति है तो उसे टील कहते है।
 - **करेबा** -कश्मीर में झीलों के निक्षेप से बने मैदान है।

विश्व के महत्वपूर्ण मैदान





ग्रेट प्लेन्स (अमेरिका)

- 'उत्तरी अमेरिका की खाद्य टोकरी' के रूप में जाना जाता है।
- प्रमुख कृषि क्षेत्र है और गेहूँ यहाँ की मुख्य फसल है।
- इन मैदानों में तेल और गैस के प्राकृतिक भंडार भी हैं।

प्रेयरी (उत्तरी अमेरिका)

- ये घास के मैदान हैं।
- पूर्वी किनारे पर पश्चिमी किनारे (30 सेमी) की तुलना में अधिक मात्रा में वर्षा (100 सेमी) प्राप्त होती है।

सिंधु घाटी का मैदान (भारत-पाकिस्तान)

- अपनी महत्वपूर्ण सहायक नदी झेलम सहित सिंधु नदी का बेसिन एक बड़ी उपजाऊ भूमि है।
- यह क्षेत्र भारत और पाकिस्तान के बीच एक विवादित क्षेत्र है।

गंगा का मैदान (भारत)

- यह मैदान दुनिया की आबादी के लगभग 1/7वे भाग का घर है।
- समृद्ध भूजल के कारण, इन मैदानों में सघन खेती की जाती है।
- इस क्षेत्र की मुख्य फसलें चावल, गेहूँ, मक्का, गन्ना और कपास हैं।

उत्तरी चीन का मैदान

- यह समतल मैदान चीन में बाजरा, मक्का और कपास उत्पादन का मुख्य क्षेत्र है।
- यहाँ गेहूँ और मूंगफली भी उगाई जाती है।
- मैदान दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है।
- बीजिंग मैदान के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित है।

लानोस (दक्षिणी अमेरिका)

- ओरिनोको नदी के बेसिन का विशाल मैदान लानोस कहलाता है।
- शुष्क मौसम यह एक रेगिस्तान बन जाता है लेकिन बरसात के मौसम में यहाँ घास की बहुतायत होती है।

पम्पास (दक्षिणी अमेरिका)

- ला प्लाटा नदी प्रणाली के चौड़े, वृक्षरहित, घास से ढके मैदान, जो दुनिया की सबसे व्यापक चारागाह भूमि हैं।

सेलवास (दक्षिणी अमेरिका)

- यह अमेजन नदी घाटी का विशाल वनाच्छादित मैदान है।
- यह अत्यधिक गर्म और भारी वर्षा का क्षेत्र है और इसमें दुनिया का सबसे बड़ा जंगल है।

लोम्बार्डी मैदान (इटली)

- इटली का सबसे उपजाऊ हिस्सा जो पो नदी द्वारा सींचा जाता है।
- यह मक्का, फल और शहतूत के पौधे, जिन पर रेशमकीट पाला जाता है, के लिए जाना जाता है।

स्टेपीस (रूस)

- रूस का विशाल वृक्षविहीन मैदान जो कैस्पियन सागर से पूर्व की ओर फैला है।

- वे गर्मियों में बहुत गर्म और सर्दियों में बहुत ठंडे होते हैं और यहाँ वर्षा नहीं होती है।

टुंड्रा:

- अमेरिका, एशिया और यूरोप के चरम उत्तर में ध्रुवों के पास का दलदली मैदानी भाग टुंड्रा कहलाता है।
- यह वर्ष में लगभग नौ महीने तक जमा रहता है।
- मछली पकड़ना और शिकार करना लोगों का मुख्य व्यवसाय है।

सवाना (उत्तरी अफ्रीका)

- सवाना घास का मैदान है जहाँ वृक्षों का घनत्व बहुत कम है।
- यहाँ की जलवायु गर्म है और वर्षा भी लगभग 50.8 से 127 सेमी (20-50 इंच) प्रति वर्ष ही होती है।

पार्कलैंड्स (पूर्वी अफ्रीका)

- इस क्षेत्र में खुली भूमि में हरी घास और विकसित पेड़ शामिल हैं।

वेल्ड (दक्षिण अफ्रीका):

- यह दक्षिण अफ्रीका में पाया जाने वाला खुला चारागाह है।

डाउंस (ऑस्ट्रेलिया)

- डाउंस ऑस्ट्रेलिया के घास के मैदान हैं।
- यह क्षेत्र ज्यादातर आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय जलवायु का अनुभव करता है।
- भूजल सिंचाई की मदद से यहाँ चना, सोयाबीन और कई अन्य फसलें उगाई जाती हैं।

विश्व के प्रमुख घास के मैदान

घास के मैदान	क्षेत्र
स्टेपी	यूरोप एवं उत्तरी एशिया
पुस्टाज	हंगरी
प्रेयरीज	संयुक्त राज्य अमेरिका
पंपास	अर्जेंटीना
वेल्ड्स	दक्षिण अफ्रीका
डाउंस	ऑस्ट्रेलिया
कैंटरबरी	न्यूजीलैंड
सवाना	अफ्रीका एवं ऑस्ट्रेलिया
टैगा	यूरोप एवं एशिया

मरूस्थल

मरूस्थल के प्रकार

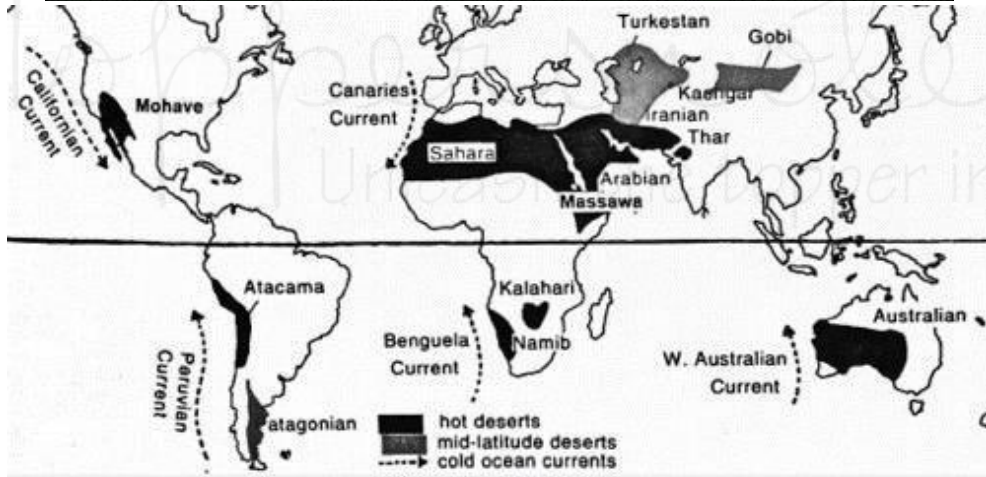
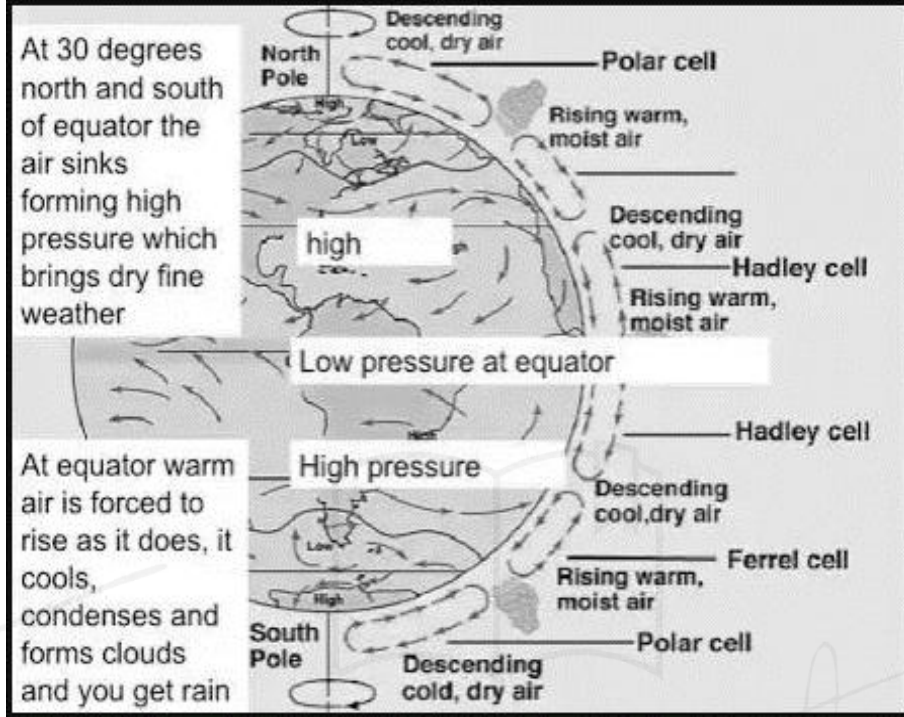
उपोष्णकटिबंधीय मरूस्थल

- उपोष्णकटिबंधीय मरूस्थल वायुराशियों के संचलन पैटर्न के कारण होते हैं।
- वे कर्क रेखा के साथ, भूमध्य रेखा के उत्तर में 15 से 30 डिग्री के बीच, या मकर रेखा के साथ, भूमध्य रेखा के 15 से 30 डिग्री दक्षिण में पाए जाते हैं।



- गर्म, नम हवा भूमध्य रेखा के पास के वातावरण में ऊपर उठती है। जैसे ही हवा ऊपर उठती है, यह ठंडी हो जाती है और भारी उष्णकटिबंधीय वर्षा करती है।
- परिणामी ठंडा, शुष्क वायु द्रव्यमान भूमध्य रेखा से दूर चला जाता है।

- जैसे-जैसे यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के करीब पहुंचता है, हवा नीचे बैठती है और फिर से गर्म हो जाती है।
- अवरोही वायु बादलों के निर्माण में बाधक होती है, इसलिए नीचे की भूमि पर बहुत कम वर्षा होती है।
- उदाहरण: सहारा रेगिस्तान (अफ्रीका), कालाहारी रेगिस्तान (अफ्रीका) और तनामी रेगिस्तान (ऑस्ट्रेलिया)।



उत्तरी गोलार्ध में प्रमुख गर्म रेगिस्तान 20-30 डिग्री उत्तर और महाद्वीपों के पश्चिमी हिस्से के बीच स्थित हैं। क्यों?

- गर्म रेगिस्तान अश्व अक्षांशों या उप-उष्णकटिबंधीय उच्च दबाव बेल्ट के साथ स्थित हैं जहां हवा अवतरित होती है, एक ऐसी स्थिति जो किसी भी प्रकार की वर्षा के लिए कम से कम अनुकूल होती है।
- बारिश वाली व्यापारिक हवाएं ऑफ-शोर और वेस्टरलीज जो तट पर हैं, रेगिस्तान की सीमा के बाहर बहती हैं।

- जो भी हवाएं रेगिस्तान में पहुंचती हैं, वे ठंडे से गर्म क्षेत्रों की ओर चलती हैं, और उनकी सापेक्षिक आर्द्रता कम हो जाती है, जिससे संघनन लगभग असंभव हो जाता है।
- निरंतर नीले आकाश में शायद ही कोई बादल हो। सापेक्षिक आर्द्रता अत्यंत कम है, तटीय जिलों में 60 प्रतिशत से घटकर रेगिस्तान के अंदरूनी इलाकों में 30 प्रतिशत से भी कम हो गई है। ऐसी परिस्थितियों में, नमी का हर अंश वाष्पित हो जाता है और इस प्रकार रेगिस्तान स्थायी सूखे के क्षेत्र बन जाते हैं। वर्षा दुर्लभ और सबसे अविश्वसनीय दोनों है।



- पश्चिमी तटों पर, ठंडी धाराओं की उपस्थिति आने वाली हवा को ठंडा करके घने कोहरे को जन्म देती है। यह हवा बाद में गर्म भूमि के संपर्क में आने से गर्म हो जाती है, और न के बराबर ही बारिश होती है। चिली के तट के साथ पेरू की ठंडी धारा का शुष्क प्रभाव इतना स्पष्ट है कि अटाकामा रेगिस्तान के लिए औसत वार्षिक वर्षा 1.3 सेमी से अधिक नहीं है।

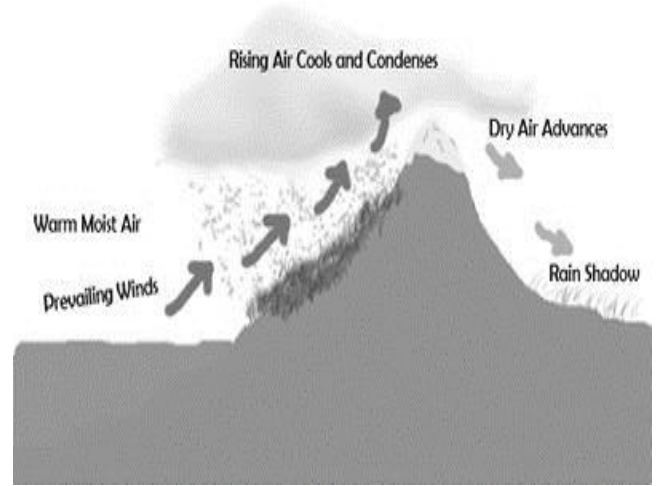
तटीय मरुस्थल

- शीत महासागरीय धाराएँ तटीय मरुस्थलों के निर्माण में योगदान करती हैं। किनारे की ओर बहने वाली हवा, ठंडे पानी के संपर्क में आने से ठंडी, घने कोहरे की एक परत पैदा करती है।
 - हालांकि आर्द्रता अधिक है, वायुमंडलीय परिवर्तन जो सामान्य रूप से वर्षा का कारण बनते हैं, मौजूद नहीं हैं।
- एक तटीय रेगिस्तान लगभग पूरी तरह से वर्षा रहित हो सकता है, फिर भी कोहरे से आर्द्र हो सकता है।
- उदाहरण: चिली के प्रशांत महासागरीय तट पर स्थित अटाकामा रेगिस्तान एक तटीय रेगिस्तान है। यह है अटाकामा मरुस्थल पृथ्वी पर सबसे शुष्क स्थान है।



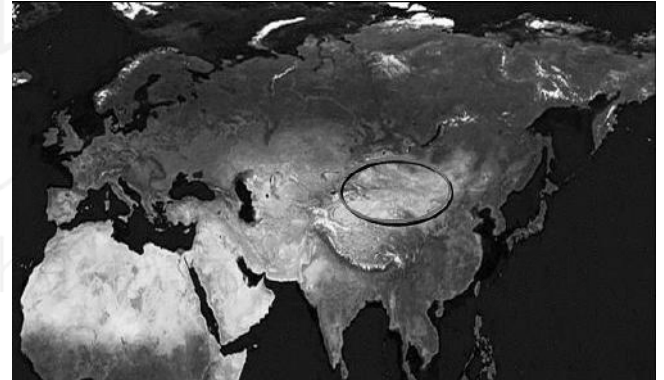
वर्षा छाया रेगिस्तान

- वर्षा छाया रेगिस्तान कुछ पर्वत श्रृंखलाओं के उत्तल ढलानों के पास मौजूद हैं।
- उत्तल ढलान प्रचलित हवाओं से दूर हैं।
- जब नमी से भरी हवा किसी पर्वत श्रृंखला से टकराती है, तो उसे ऊपर उठने के लिए मजबूर होना पड़ता है।
- हवा तब ठंडी होती है और बादलों का निर्माण करती है जो हवा की ओर (हवा की ओर) ढलानों पर नमी छोड़ते हैं।
- जब हवा पर्वत की चोटी पर चलती है और हवा की ढलानों से नीचे उतरने लगती है, तो थोड़ी नमी बची रहती है। अवरोही हवा गर्म हो जाती है, जिससे बादलों का बनना मुश्किल हो जाता है।
- उदाहरण: अमेरिका के कैलिफोर्निया और नेवादा राज्यों में डेथ वैली, एक वर्षा छाया रेगिस्तान है। मृत घाटी, उत्तरी अमेरिका का सबसे निचला और सबसे शुष्क स्थान, सिएरा नेवादा पहाड़ों की वर्षा छाया में है।



आंतरिक रेगिस्तान

- आंतरिक मरुस्थल, जो महाद्वीपों के मध्य में पाए जाते हैं, मौजूद हैं क्योंकि नमी से भरी हवाएँ उन तक नहीं पहुँचती हैं।
- जब तक तटीय क्षेत्रों से हवा का द्रव्यमान आंतरिक रूप से पहुंचता है, तब तक वे अपनी सारी नमी खो चुके होते हैं।
- आंतरिक रेगिस्तान को कभी-कभी अंतर्देशीय रेगिस्तान कहा जाता है।
- उदाहरण: गोबी मरुस्थल, चीन और मंगोलिया में।

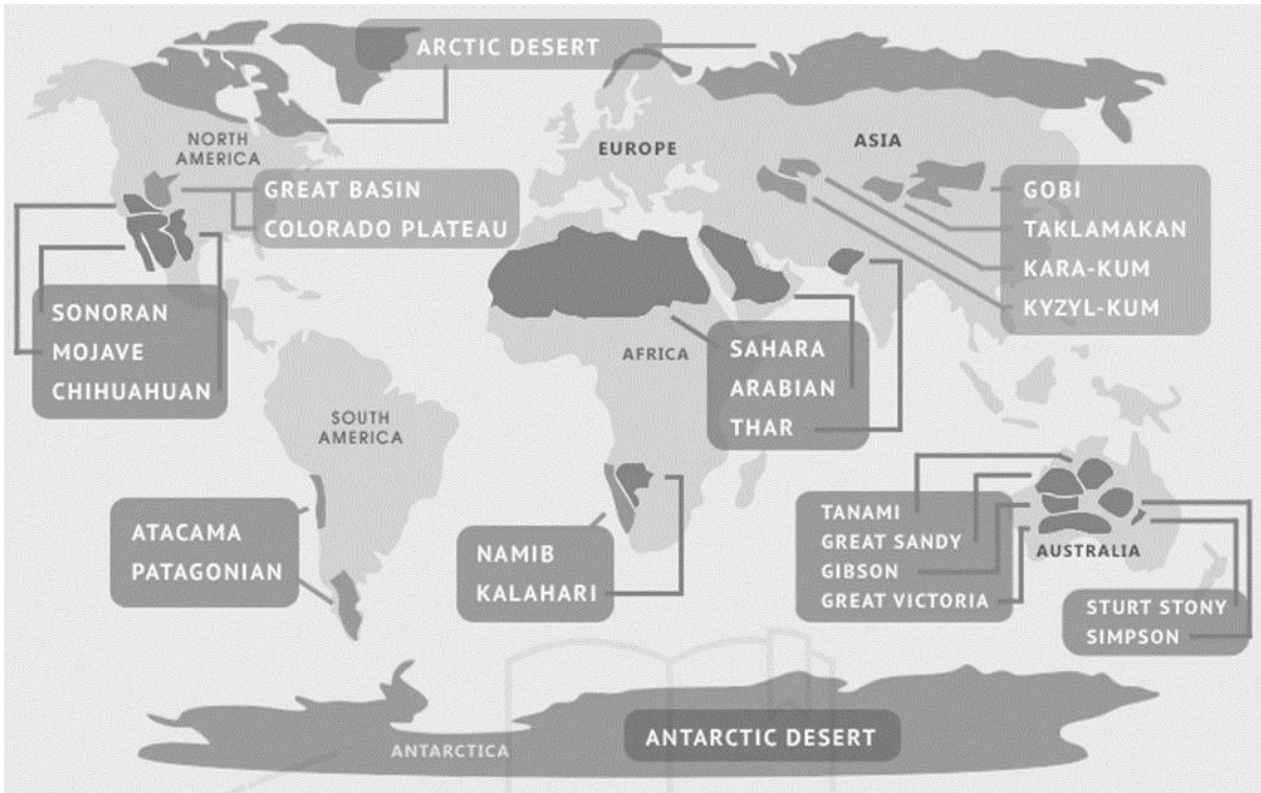


ध्रुवीय रेगिस्तान

- आर्कटिक और अंटार्कटिक के कुछ हिस्सों को रेगिस्तान के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- इन ध्रुवीय रेगिस्तानों में बड़ी मात्रा में पानी होता है, लेकिन इसका अधिकांश हिस्सा साल भर ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों में बंद रहता है।
 - इसलिए, लाखों लीटर पानी की मौजूदगी के बावजूद, पौधों और जानवरों के लिए वास्तव में बहुत कम उपलब्ध है।
- विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल भी सबसे ठंडा है।
- अंटार्कटिका का लगभग पूरा महाद्वीप एक ध्रुवीय रेगिस्तान है, जहाँ कम वर्षा होती है। कुछ जीव अंटार्कटिका की ठंडी, शुष्क जलवायु का सामना कर सकते हैं।



विश्व के महत्वपूर्ण मरुस्थल



महत्वपूर्ण रेगिस्तान	रेगिस्तान के प्रकार	स्थान
अंटार्कटिका	ध्रुवीय	अंटार्कटिका
आर्कटिक	ध्रुवीय	उत्तरी अमेरिका (अलास्का, कनाडा और ग्रीनलैंड), उत्तरी यूरोप (फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे और स्वीडन), पूर्वी यूरोप (यूरोपीय रूस), उत्तर एशिया (साइबेरिया)
सहारा	उपोष्णकटिबंधीय	उत्तरी अफ्रीका (अल्जीरिया, मिस्र, लीबिया, मोरक्को, सूडान और ट्यूनीशिया), पश्चिम अफ्रीका (माली, मॉरिटानिया और नाइजर), मध्य अफ्रीका (चाड), पूर्वी अफ्रीका (इरिट्रिया)
ऑस्ट्रेलियाई रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	ऑस्ट्रेलिया
अरब रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	पश्चिमी एशिया (इराक, जॉर्डन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और यमन)
गोबी मरुस्थल	शीत	पूर्वी एशिया (चीन और मंगोलिया)
कालाहारी रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	दक्षिणी अफ्रीका (बोत्सवाना, नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका), मध्य अफ्रीका (अंगोला)
पेटागोनियन रेगिस्तान	शीत	दक्षिणी अमेरिका (अर्जेंटीना और चिली)
सीरियाई रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	पश्चिमी एशिया (इराक, जॉर्डन और सीरिया)
ग्रेट बेसिन	शीत	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका
चिहुआहुआ रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	मध्य अमेरिका (मेक्सिको), उत्तरी अमेरिका (संयुक्त राज्य अमेरिका)
काराकुम मरुस्थल	शीत	तुर्कमेनिस्तान
कोलोराडो पठार	शीत	संयुक्त राज्य अमेरिका
सोनोरन रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	मध्य अमेरिका (मेक्सिको), उत्तरी अमेरिका (संयुक्त राज्य अमेरिका)
तकलामकान मरुस्थल	शीत	चीन
थार रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	भारतीय उपमहाद्वीप (भारत और पाकिस्तान)
दशत-ए मार्ग	उपोष्णकटिबंधीय	अफगानिस्तान
रेगिस्तान रेगिस्तान	उपोष्णकटिबंधीय	अफगानिस्तान



अटाकामा रेगिस्तान	तटीय	दक्षिण अमेरिका (चिली और पेरू)
मोहावे मरूस्थल	उपोष्णकटिबंधीय	संयुक्त राज्य अमेरिका
कोलंबिया बेसिन	शीत	संयुक्त राज्य अमेरिका
नामीब मरूस्थल	शीत	तटीय दक्षिणी अफ्रीका (नामीबिया), मध्य अफ्रीका (अंगोला)
दशत-ए कविर	उपोष्णकटिबंधीय	ईरान
दशत-ए लूट	उपोष्णकटिबंधीय	ईरान

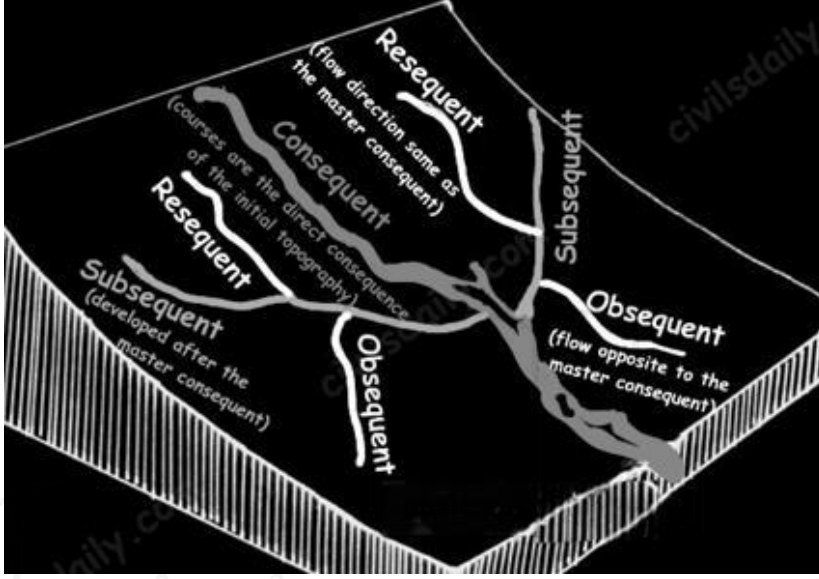




नदियाँ

अपवाह प्रतिरूप के प्रकार

पूर्ववर्ती अपवाह



- क्षेत्र की भूआकृति और भूविज्ञान से संबंधित है।
- नदी का मार्ग नदी के ढलान और स्थलाकृति पर अत्यधिक निर्भर है।
- सबसे अधिक पाया जाने वाला अपवाह प्रतिरूप।
- वर्गीकरण -
 - अनुवर्ती नदियाँ
 - ढलान की सामान्य दिशा में बहती हैं।
 - अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियाँ हैं।
 - ✓ जैसे, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी, पश्चिमी घाट से उतरकर बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।
 - परवर्ती नदियाँ:
 - मुख्य अपवाह प्रतिरूप स्थापित होने के बाद एक अंतर्निहित चट्टान के साथ सिर की ओर कटाव द्वारा गठित एक सहायक धारा।
 - उदा. चंबल, सिंध, केन, बेतवा, टोंस / तमसा और सोन यमुना और गंगा से समकोण पर मिलते हैं।
 - ✓ गंगा जल निकासी व्यवस्था परवर्ती जल निकासी व्यवस्था है।
 - प्रति अनुवर्ती नदियाँ:
 - यह नदियों के समकोण पर बनते हैं और परवर्ती नदी के प्रवाह की दिशा के विपरीत प्रवाहित होती हैं।

○ नवानुवर्ती नदियाँ

- ढाल के अनुरूप तथा प्रमुख अनुवर्ती नदी के प्रवाह की दिशा में प्रवाहित होती हैं।
- अनुवर्ती के बाद विकसित होती हैं और द्वितीय श्रेणी की नदी हैं।

असंगत या अक्रमबद्ध जल निकासी पैटर्न/अपवाह प्रतिरूप

- यह क्षेत्र के भूआकृति और भूविज्ञान से संबंधित नहीं है।
- स्थलाकृति में परिवर्तन के बावजूद नदी अपने प्रारंभिक मार्ग का अनुसरण करती है।
- पूर्ववर्ती और अध्यारोपित में वर्गीकृत।
- दोनों प्रकार की जल निकासी वाली नदियाँ अत्यधिक ढलान वाली सतह से बहती हैं।
 - पूर्ववर्ती जल निकासी या असंगत जल निकासी:
 - नदी के ढलान का हिस्सा और आसपास का क्षेत्र ऊपर उठा हुआ → नदी स्थित भूखंड को काटकर मूल मार्ग का अनुसरण करती है → आरी (ऊर्ध्वाधर कटाव) की तरह ऊपर उठे हुए हिस्से को काटती है → गहरी घाटियाँ बनाती है।
 - जैसे: सिंधु, सतलुज, ब्रह्मपुत्र और हिमालय से पुरानी अन्य हिमालयी नदियाँ।

